भारत में महिला किसानों का सशक्तिकरण: अधिकार, पहचान और पोषण संबंधी न्याय

UPSC प्रासंगिकता - प्रारंभिक परीक्षा: राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, राष्ट्रीय किसान नीति, कृषि का महिलाकरण मुख्य परीक्षा - GS पेपर I: महिला और सामाजिक मुद्दे, GS पेपर III: कृषि, खाद्य सुरक्षा और पोषण नीतियां

IAS-PCS Institute

चर्चा में क्यों?

- 8 मार्च, 2026 को दुनिया भर में महिलाओं और लड़कियों के लिए समान अधिकारों और न्याय पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करने के साथ 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' मनाया जा रहा है।
- वर्ष 2026 को **'महिला किसान के अंतरराष्ट्रीय वर्ष'** के रूप में भी मनाया जा रहा है, जो कृषि में लगी महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों पर ध्यान आकर्षित करता है।
- भारत में, कानूनी सुधारों और नीतियों के बावजूद, महिला किसानों में अभी भी औपचारिक पहचान, भूमि स्वामित्व और संसाधनों तक पहुंच की कमी है, जो कृषि प्रणाली के भीतर संरचनात्मक असमानताएं पैदा करती है।

Result Mitra
रिजल्ट का साथी

पृष्ठभूमि: भारतीय कृषि में महिलाओं की भूमिका

भारतीय कृषि-खाद्य प्रणालियों में महिलाएं एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, और वे निम्नलिखित गतिविधियों में योगदान देती हैं:

@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

- फसलों की बुवाई और रोपाई
- पशुधन प्रबंधन
- कटाई के बाद प्रसंस्करण (Post-harvest processing)
- घरेलू खाद्य प्रावधान
- विभिन्न कृषि अध्ययनों के अनुसार, कृषि श्रम में महिलाएं महत्वपूर्ण हिस्सा साझा करती हैं, फिर भी वे भूमि रिकॉर्ड और नीतिगत ढांचे में काफी हद तक अदृश्य बनी हुई हैं।
- वास्तविक योगदान और औपचारिक पहचान के बीच का यह अंतर सशक्तिकरण में एक बड़ी बाधा है।

महिला किसानों के सामने आने वाली संरचनात्मक बाधाएं

1. भूमि स्वामित्व का अभाव

- यद्यपि समान उत्तराधिकार अधिकारों जैसे कानूनी सुधार मौजूद हैं, फिर भी भूमि स्वामित्व पर पुरुषों का भारी दबदबा बना हुआ है। इसके मुख्य कारणों में शामिल हैं:
- पितृसत्तात्मक उत्तराधिकार की परंपराएं
- पुरुष स्वामित्व के पक्ष में सामाजिक मानदंड
- कानूनी अधिकारों के प्रति सीमित जागरूकता
- भूमि पंजीकरण में प्रशासनिक बाधाएं
- परिणामस्वरूप, जो महिलाएं खेतों का प्रबंधन करती हैं, उनके पास अक्सर कानूनी भूमि शीर्षक (Land titles) नहीं होते हैं।

परिणाम:

भूमि स्वामित्व के बिना, महिलाओं को निम्नलिखित तक पहुंच प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है:

- संस्थागत ऋण (Bank Credit)
- फसल बीमा
- सिंचाई योजनाएं
- कृषि सब्सिडी
- सरकारी कल्याणकारी कार्यक्रम
- इस प्रकार, 'बहिष्करण' (Exclusion) स्वयं नीति डिजाइन का हिस्सा बन जाता है।

IAS-PCS Institute
Result Mitra
रिजल्ट का साथी
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

भारत में कृषि का महिलाकरण

- गैर-कृषि नौकरियों के लिए ग्रामीण क्षेत्रों से पुरुषों के बढ़ते प्रवासन के परिणामस्वरूप कृषि का महिलाकरण हुआ है। अब महिलाएं खेती की जिम्मेदारियों का एक बड़ा हिस्सा निभाती हैं, जिनमें शामिल हैं:
- खेती से जुड़े निर्णय
- श्रम प्रबंधन
- घरेलू खाद्य सुरक्षा
- हालाँकि, यह संक्रमण पर्याप्त संस्थागत समर्थन या संपत्ति के स्वामित्व के बिना हुआ है।

स्वास्थ्य और पोषण संबंधी चुनौतियां

- राष्ट्र का पेट भरने के बावजूद, कई महिला किसान गंभीर पोषण संबंधी कमियों का सामना करती हैं। प्रमुख मुद्दों में शामिल हैं:
- प्रजनन आयु की महिलाओं में एनीमिया (रक्तअल्पता) का उच्च प्रसार
- सूक्ष्म पोषक तत्वों (Micronutrients) की कमी
- कृषि सत्रों के दौरान भारी शारीरिक कार्यभार
- यह गंभीर स्वास्थ्य परिणामों की ओर ले जाता है।

IAS-PCS Institute

पीढ़ीगत प्रभाव

मातृ कुपोषण के कारण निम्नलिखित समस्याएं हो सकती हैं:

- जन्म के समय कम वजन
- बच्चों में स्टंटिंग (नाटापन)
- खराब संज्ञानात्मक (Cognitive) विकास
- इस प्रकार, महिलाओं का पोषण सीधे तौर पर भावी पीढ़ियों को प्रभावित करता है।

Result Mitra
रिजल्ट का साथी
www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

भारत का 'खाद्य अधिकार' ढांचा

- भारत ने राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA) 2013 पर आधारित एक महत्वाकांक्षी खाद्य सुरक्षा संरचना पेश की है। यह अधिनियम प्रदान करता है:
- सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) के माध्यम से रियायती खाद्यान्न
- गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताओं के लिए पोषण संबंधी सहायता
- मातृत्व लाभ
- हालाँकि, चुनौतियां अभी भी बनी हुई हैं।

मुख्य सीमाएं:

- खाद्य वितरण अभी भी 'अनाज-केंद्रित' (चावल-गेहूं) बना हुआ है।
- दालों, फलों, सब्जियों और मोटे अनाजों (Millets) का समावेश सीमित है।
- कृषि और पोषण नीतियों के बीच कमजोर एकीकरण है।
- इस प्रकार, कानूनी अधिकार अक्सर महिलाओं के लिए बेहतर पोषण परिणामों में नहीं बदल पाते हैं।

नीतिगत विसंगति: पहचान बनाम वास्तविकता

- कृषि नीतियां अक्सर भूमि स्वामित्व के आधार पर किसानों को परिभाषित करती हैं।
- हालाँकि, **राष्ट्रीय किसान नीति** 2007 किसानों की एक व्यापक परिभाषा प्रदान करती है जिसमें शामिल हैं:
- भूमिहीन कृषक
- बटाईदार (Sharecroppers)
- खेतिहर मजदूर
- जनजातीय और वन संग्रहकर्ता
- इस समावेशी परिभाषा को अपनाने से कृषि में महिलाओं के वास्तविक योगदान को पहचानने में मदद मिल सकती है।

IAS-PCS Institute

महिला किसानों के लिए प्रमुख नीतिगत प्राथमिकताएं

1. कानूनी पहचान और डेटा दृश्यता महिला किसानों को निम्नलिखित में मान्यता दी जानी चाहिए:

- कृषि नीतियां
- सरकारी योजनाएं
- आधिकारिक सांख्यिकी (Statistics)
- लिंग-विभाजित डेटा (Gender-disaggregated data) बेहतर लक्षित नीतियां बनाने में मदद कर सकता है।

Result Mitra
रिजल्ट का साथी
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

2. भूमि और संसाधन अधिकारों को मजबूत करना आवश्यक उपायों में शामिल हैं:

- समान उत्तराधिकार अधिकारों को लागू करना
- पति-पत्नी के लिए संयुक्त भूमि स्वामित्व (Joint titles) को बढ़ावा देना
- महिलाओं के नाम पर भूमि पंजीकरण को प्रोत्साहित करना
- लिंग-संवेदनशील भूमि प्रशासन सुनिश्चित करना
- महिलाओं के स्वयं सहायता समूह जैसे सामूहिक संस्थान भी मोलभाव करने की शक्ति (Bargaining power) को बढ़ा सकते हैं।

3. खाद्य प्रणालियों को पोषण के साथ जोड़ना सार्वजनिक खरीद और खाद्य कार्यक्रमों को निम्नलिखित के उत्पादन को बढ़ावा देना चाहिए:

- मोटे अनाज (Millets)
- दालें
- फल और सब्जियां इन्हें निम्नलिखित में एकीकृत किया जाना चाहिए:

- सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS)
- आंगनवाड़ी पोषण कार्यक्रम
- स्कूल भोजन (School meal) योजनाएं
- किचन गार्डन और बीज बैंक जैसी सामुदायिक पहल स्थानीय पोषण में और सुधार कर सकती है।

4. प्रौद्योगिकी और कृषि विस्तार तक पहुंच महिला किसानों को आवश्यकता है:

- श्रम बचाने वाली प्रौद्योगिकियां (Labour-saving technologies)
- प्रशिक्षण और विस्तार सेवाएं
- बाजार की जानकारी
- जलवायु-अनुकूल कृषि पद्धतियां
- कठिन शारीरिक श्रम (Drudgery) को कम करने से स्वास्थ्य, उत्पादकता और निर्णय लेने की शक्ति में सुधार हो सकता है।

संस्थानों और अनुसंधान संगठनों की भूमिका

- एम. एस. स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन जैसे संस्थानों ने कृषि में महिलाओं के नेतृत्व के महत्व पर प्रकाश डाला है।
- इसी तरह, विश्व खाद्य कार्यक्रम (WFP) इस बात पर जोर देता है कि महिलाओं को खाद्य प्रणालियों के केंद्र में रखने से सामुदायिक स्तर की खाद्य सुरक्षा और लचीलापन (Resilience) में सुधार होता है। जब महिलाओं को ज्ञान, अधिकार और संस्थागत समर्थन मिलता है, तो वे निम्नलिखित की प्रमुख चालक बन जाती हैं:
- जलवायु-अनुकूल कृषि
- जैव विविधता संरक्षण
- पोषण-संवेदनशील खेती

आगे की राह

कृषि में लैंगिक समानता प्राप्त करने के लिए एक परिवर्तनकारी नीतिगत दृष्टिकोण की आवश्यकता है। मुख्य कदमों में शामिल हैं:

- कानून और नीति में महिलाओं को किसान के रूप में मान्यता देना
- भूमि, ऋण और इनपुट (बीज-खाद) तक महिलाओं की पहुंच का विस्तार करना
- कृषि नीतियों को पोषण लक्ष्यों के साथ एकीकृत करना
- महिला किसानों के लिए विस्तार सेवाओं को मजबूत करना
- स्थानीय खाद्य प्रणालियों में महिलाओं के नेतृत्व को बढ़ावा देना

IAS PCS Institute
Result Mitra
रिजल्ट का साथी
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

निष्कर्ष

- महिला किसान भारत की कृषि अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं, फिर भी उनका योगदान काफी हद तक अदृश्य और कम मूल्यांकित बना हुआ है।
- भूमि अधिकार, संसाधनों तक पहुंच और नीतिगत ढांचे में मान्यता सुनिश्चित करना न केवल लैंगिक न्याय के लिए, बल्कि खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण विकास को मजबूत करने के लिए भी आवश्यक है।
- जैसे-जैसे दुनिया अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मना रही है, प्रतीकात्मक मान्यता को ठोस नीतिगत कार्रवाई में बदलना एक अधिक न्यायसंगत, लचीला और पोषण की दृष्टि से सुरक्षित भारत बनाने के लिए महत्वपूर्ण होगा।

IAS-PCS Institute

UPSC प्रारंभिक परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में कृषि में महिलाओं के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए—

1. भारत में कृषि श्रमबल में महिलाओं की महत्वपूर्ण हिस्सेदारी है।
2. कृषि भूमि का स्वामित्व संस्थागत ऋण तथा कई सरकारी कृषि योजनाओं तक पहुँच प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण मानदंड है।
3. **राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013** महिलाओं को कृषि सब्सिडी के उद्देश्य से कानूनी रूप से किसान के रूप में मान्यता देता है।

Result Mitra
रिजल्ट का साथी
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

A. केवल 1

B. केवल 1 और 2

C. केवल 2 और 3

D. 1, 2 और 3

उत्तर: B

प्रश्न 2. राष्ट्रीय किसान नीति 2007 के संदर्भ में निम्नलिखित पर विचार कीजिए—

इस नीति में किसान की परिभाषा में निम्नलिखित को शामिल किया गया है:

1. भूमि के स्वामी कृषक
2. कृषि मजदूर
3. बटाईदार और किरायेदार किसान
4. वन उपज संग्रह में संलग्न जनजातीय समुदाय

IAS PCS Institute

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

A. केवल 1 और 2

B. केवल 1, 3 और 4

C. केवल 2, 3 और 4

D. 1, 2, 3 और 4

उत्तर: D

UPSC मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न:भारत की कृषि और खाद्य प्रणालियों में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है, फिर भी नीति-निर्माण तथा संसाधनों के स्वामित्व में उन्हें पर्याप्त मान्यता नहीं मिलती। महिला किसानों के समक्ष आने वाली चुनौतियों का परीक्षण कीजिए तथा उनके अधिकारों और पोषण सुरक्षा को सुदृढ़ करने के लिए नीतिगत उपाय सुझाइए। (250 शब्द)

Result Mitra
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806